- चन्द्रगुप्त द्वितीय का साम्राज्य पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में बंगाल तक तथा उत्तर में हिमालय की तलहटी से दक्षिण में नर्मदा नदी तक विस्तृत था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में उसकी प्रथम राजधानी **पाटलिपुत्र** और द्वितीय राजधानी **उज्जयिनी** थी, ये दोनों ही नगर गुप्तकालीन शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र थे।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय का काल **साहित्य** और **कला का स्वर्ण** युग कहा जाता है।
- इसने रजत मुद्राओं (silver coins) का सर्वप्रथम प्रचलन करवाया था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में विद्वानों एवं कलाकारों को आश्रय प्राप्त था। उसके दरबार में **नौ रत्न** थे—कालिदास, धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बैताल भट्ट, घटकर्पर, वराहमिहिर और वररुचि।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में **चीनी यात्री फाह्यान** (399 ई०-412 ई०) भारत यात्रा पर आया था।

कुमारगुप्त प्रथम (413 ई०-455 ई०)

- चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के पश्चात् उसका पुत्र कुमारगुप्त प्रथम गुप्त साम्राज्य का शासक बना। कुमारगुप्त की माता का नाम ध्रुव देवी था।
- गुप्त शासकों में सर्वाधिक अभिलेख कुमारगुप्त के ही प्राप्त हुए हैं।
- कुमारगुप्त प्रथम के अभिलेखों व मुद्राओं से ज्ञात होता है कि उसने अनेक उपाधियाँ धारण की थीं। उसने 'महेन्द्र कुमार', 'श्रीमहेन्द्र', 'श्रीमहेन्द्रसिंह', 'महेन्द्रकर्म', 'अजित महेन्द्र' और 'गुप्तकुल व्योम' आदि उपाधियाँ धारण की थीं। उसकी सर्वप्रमुख उपाधि 'महेन्द्रादित्य' थी।
- कुमारगुप्त प्रथम स्वयं वैष्णव धर्मानुयायी था, किन्तु उसने धर्म-सहिष्णुता की नीति का पालन किया था।
- कुमारगुप्त प्रथम ने अधिकाधिक संख्या में मयूर आकृति की रजत मुद्राएँ प्रचलित की थीं।
- कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल में नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी।

स्कन्दगुप्त (455 ई०-467 ई०)

- स्कन्दगुप्त गुप्त वंश का अन्तिम प्रतापी शासक था।
- स्कन्दगुप्त ने **'देवराज'**, **'विक्रमादित्य'**, **'क्रमादित्य'** आदि उपाधियाँ धारण की थीं।
- स्कन्दगुप्त ने मौर्यों द्वारा निर्मित **सुदर्शन झील** का जीर्णोद्धार करवाया था।
- स्कन्दगुप्त की दो विजय उल्लेखनीय हैं—
  - **पुष्यमित्रों पर विजय** : कुमारगुप्त के शासनकाल के अन्तिम चरण में गुप्त साम्राज्य पर पुष्यमित्रों द्वारा आक्रमण किया गया था। पुष्यमित्रों के विरुद्ध युद्ध में गुप्त सेना का नेतृत्व स्कन्दगुप्त ने ही किया था। स्कन्दगुप्त की यह विजय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थी।
  - **हूणों पर विजय** : हूणों का गुप्त साम्राज्य पर आक्रमण स्कन्दगुप्त के शासनकाल की महत्त्वपूर्ण घटना थी। हूण बर्बर योद्धा थे, जो मध्य एशिया के खानाबदोश लोग थे। स्कन्दगुप्त को सिंहासनारूढ़ होते ही हूणों के आक्रमण का सामना करना पड़ा। स्कन्दगुप्त ने अत्याचारी हूणों को परास्त कर न केवल गुप्त साम्राज्य की रक्षा की अपितु आर्य सभ्यता एवं संस्कृति को भी नष्ट होने से बचाया।

नोट : स्कन्दगुप्त के बाद का कोई भी गुप्त शासक हूणों को रोकने में सफल नहीं हो सका तथा गुप्त साम्राज्य विखण्डित हो गया।

गुप्तकाल में सांस्कृतिक विकास

प्रशासन

- राजाओं को 'परमेश्वर', 'महाराजाधिराज', 'परमाभट्टारक' आदि नामों से पुकारा जाता था।
- 'कुमारामात्य' सबसे प्रमुख अधिकारी होते थे।
- केन्द्र में मुख्य विभाग सैन्य था। सन्धि विग्राहक सेना का मुख्याधिकारी होता था।
- गुप्तवंशी राजाओं ने बड़ी संख्या में सोने के सिक्के जारी किये जिन्हें 'दीनार' के नाम से जाना जाता था।
- चन्द्रगुप्त प्रथम के सिक्कों पर चन्द्रगुप्त व कुमार देवी का चित्र व नाम अंकित है।

सामाजिक विकास

- जातियाँ, उपजातियों में विभक्त हो गयी थीं।
- स्त्री की दशा पहले से निम्न हो गयी थी। इसी काल में सती प्रथा की प्रथम घटना का उल्लेख मिलता है।
- शूद्रों की दशा में थोड़ा सुधार हुआ था परन्तु छुआछूत की प्रथा ने जड़ें जमानी शुरू कर दी थीं।
- फाह्यान के अनुसार, 'चाण्डाल' समाज से बहिष्कृत थे और वे गाँव से बाहर बसा करते थे। उच्च जाति के लोग उनसे घृणा करते थे।
- कुमारगुप्त के शासन के दौरान नालन्दा विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी थी।

धर्म

- बौद्ध धर्म का प्रचलन कम होता जा रहा था।
- वर्तमान में प्रचलित हिन्दू धर्म के स्वरूप का निर्माण इसी युग में हुआ।
- भगवद्गीता की रचना इसी युग में हुई।
- विष्णु इनके इष्ट देवता थे।
- मूर्ति पूजा सामान्य तौर पर प्रचलन में आ चुकी थी।

कला

- गुप्त युग में विविध प्रकार की कलाओं यथा मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला, संगीत व नाट्य कला तथा मुद्राकला के क्षेत्र में आशातीत उन्नति हुई।
- अनुश्रुति में देवताओं की मूर्तियों का निर्माण हुआ। मूर्तियों में विष्णु, शिव, पार्वती, ब्रह्मा, बुद्ध तथा जैन तीर्थंकर की मूर्तियों का निर्माण हुआ।
- सारनाथ की बुद्धमूर्ति, मथुरा की वर्धमान महावीर की मूर्ति, विदिशा की वराह अवतार की मूर्ति, झाँसी की शेषशायी विष्णु की मूर्ति, काशी की गोवर्धनधारी कृष्ण की मूर्ति आदि इस युग की मूर्तिकला के प्रमुख उदाहरण हैं।
- बामियान (अफगानिस्तान) की बौद्ध मूर्तियाँ भी इसी काल से सम्बन्धित थीं।
- अजन्ता की गुफाओं के चित्र इस युग की चित्रकला के सर्वोत्तम उदाहरण हैं।
- वास्तुकला के अन्तर्गत इस युग में विभिन्न मन्दिर, गुफा, चैत्य, विहार, स्तूप तथा अट्टालिकाओं से युक्त वैभवशाली नगरों का निर्माण हुआ। इनके बनाने में पत्थरों तथा पक्की ईंटों का प्रयोग किया गया।
- झाँसी स्थित देवगढ़ का दशावतार का मन्दिर, कानपुर स्थित भीतरगाँव का मन्दिर, नागौर स्थित भूमरा का शिव मन्दिर आदि इस युग की वास्तुकला के कुछ श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

साहित्य

- गुप्त युग में साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में अत्यधिक उन्नति हुई। काशी, मथुरा, नासिक, पद्मावती, उज्जयिनी, अवरपुर, वल्लभी, पाटलिपुत्र तथा काँची आदि गुप्त युग के प्रमुख शैक्षिक केन्द्र थे।
- हिन्दू, बौद्ध तथा जैन साहित्य इस युग में लिखा गया। रामायण व महाभारत का वर्तमान स्वरूप इसी युग में प्राप्त हुआ।
- विष्णु शर्मा द्वारा पंचतन्त्र और हितोप्देश की रचना की गई। पुराणों, नारद व बृहस्पति स्मृतियाँ व अन्य धर्मशास्त्र इसी युग में रचे गए। ईश्वरकृष्ण ने सांख्यकारिका की रचना की।
- संस्कृत साहित्य में **कालिदास** ने कुमारसम्भव, मेघदूत, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्र आदि की रचना की।
- **विशाखदत्त** की मुद्राराक्षस, देवी चन्द्रगुप्तम्, **भट्टी** का रावण वध, **शूद्रक** का मृच्छकटिकम्, **सुबन्धु** की वासवदत्ता, **दण्डी** की दशकुमार चरित् इसी युग में लिखे गए।
- **हरिषेण, वीरसेन, कालिदास** तथा **विशाखदत्त** आदि इस युग के प्रसिद्ध विद्वान् थे। इनमें **हरिषेण महान् कवि, वीरसेन व्याकरणाविद** थे। बौद्ध विद्वानों में **असंग, वसुबन्धु, दिगनाग** तथा **धर्मपाल,** जैन विद्वानों में **उपेशवती, सिद्धसेन** तथा **भद्रबाहु द्वितीय** इसी युग में हुए।

विज्ञान

- गुप्त युग में गणित, पदार्थ विज्ञान, धातुविज्ञान, रसायन विज्ञान, ज्योतिष विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान की बहुत उन्नति हुई। दशम्लव तथा शून्य का अन्वेषण इसी युग में हुआ।
- **आर्यभट्ट** इस युग के प्रख्यात गणितज्ञ एवं खगोलशास्त्री थे। इन्होंने 'आर्यभट्टीय' नामक ग्रन्थ की रचना की, जिसमें अंकगणित, बीजगणित तथा रेखागणित की विवेचना की गई है। आर्यभट्ट ने 'सूर्यसिद्धान्त' नामक ग्रंथ में यह सिद्ध किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है।
- **वराहमिहिर** ने 'वृत्तसंहिता' एवं 'पचसिद्धान्ता' नाम के खगोलशास्त्र के ग्रन्थों की रचना की। **ब्रह्मगुप्त** का 'ब्रह्म सिद्धान्त' भी खगोलशास्त्र का प्रसिद्ध ग्रन्थ है। 'शप्तपंचसिका, वशिष्ठ सिद्धान्त' जैसे उच्चकोटि के ग्रन्थ इसी युग में रचे गए।
- **धन्वन्तरि** तथा **सुश्रुत** इस युग के प्रख्यात वैद्य थे। 'नवनीतकम्' इस युग की प्रसिद्ध चिकित्सा पुस्तक है। हस्त्यायुर्वेद व अश्वशास्त्र पशु चिकित्सा सम्बन्धी पुस्तकें हैं। प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य धनवन्तरि ने 'रसचिकित्सा' नामक पुस्तक की रचना की तथा सिद्ध किया कि सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा आदि धातुओं में रोग निवारण की शक्ति विद्यमान है।

गुप्तोत्तर काल के वंश तथा राज्य

हर्षवर्धन (606 ई०-647 ई०) (पुष्यभूति वंश)

हर्षवर्धन का जन्म 591 ई० के लगभग हुआ था। वह प्रभाकर वर्धन का छोटा पुत्र था।

बड़े भाई राज्यवर्धन की मृत्यु के बाद हर्षवर्धन थानेश्वर के राजसिंहासन पर आसीन हुआ।

राज्यारोहण के समय हर्ष के सम्मुख दो प्रमुख तात्कालिक समस्याएँ थीं—

- गौड़ नरेश शशांक को मारकर बड़े भाई राज्यवर्धन की हत्या का बदला लेना,
- अपनी बहन राज्यश्री को ढूंढ निकालना।

- जिस समय हर्षवर्धन थानेश्वर के राजसिंहासन पर बैठा उस समय राज्य की स्थिति काफी संकटपूर्ण थी, क्योंकि गौड़ नरेश शशांक द्वारा उसके भाई का वध कर दिया गया था और उसकी बहन राज्यश्री अपने प्राण बचाने के लिए अज्ञातवास को चली गई थी।

'रामायण' कहते हैं।

गुप्त वंश

चन्द्रगुप्त प्रथम (319 ई०-335 ई०)

- गुप्त अभिलेखों से ज्ञात होता है कि चन्द्रगुप्त प्रथम ही गुप्त वंश का प्रथम स्वतन्त्र शासक था जिसकी उपाधि '**महाराजाधिराज**' थी।
- चन्द्रगुप्त प्रथम, गुप्त वंश के द्वितीय शासक घटोत्कच का पुत्र था। गुप्त वंश के प्रथम शासक का नाम श्रीगुप्त था।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने '**गुप्त सम्वत**' की स्थापना 319-20 ई० में की थी।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी राजकुमारी **कुमार देवी** के साथ विवाह किया था।
- इस समय लिच्छवियों के दो राज्य थे—
  - वैशाली का राज्य,
  - नेपाल का राज्य।
- कुमार देवी से विवाह करके चन्द्रगुप्त प्रथम ने वैशाली का राज्य प्राप्त कर लिया था।

समुद्रगुप्त (335 ई०-375 ई०)

- चन्द्रगुप्त प्रथम के पश्चात् उसका पुत्र समुद्रगुप्त शासक बना। वह लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी से उत्पन्न हुआ था।
- समुद्रगुप्त का शासनकाल राजनैतिक एवं सांस्कृतिक दोनों ही दृष्टियों से गुप्त साम्राज्य के उत्कर्ष का काल माना जाता है।
- समुद्रगुप्त के विषय में यद्यपि अनेक शिलालेखों, स्तम्भलेखों, मुद्राओं व साहित्यिक ग्रन्थों से व्यापक जानकारी प्राप्त होती है, परन्तु सौभाग्य से समुद्रगुप्त पर प्रकाश डालने वाली अत्यन्त प्रामाणिक सामग्री '**प्रयाग प्रशस्ति**' के रूप में उपलब्ध है।
- राजसिंहासन पर आसीन होने के पश्चात् समुद्रगुप्त ने दिग्विजय की योजना बनाई। '**प्रयाग-प्रशस्ति**' के अनुसार इस योजना का ध्येय 'धरणि-बन्ध' (भूमण्डल को बांधना) था।
- समुद्रगुप्त गुप्त वंश का एक महान् योद्धा तथा कुशल सेनापति था, इसी कारण उसे '**भारत का नेपोलियन**' कहा जाता है।
- समुद्रगुप्त का साम्राज्य पूर्व में ब्रह्मपुत्र, दक्षिण में नर्मदा तथा उत्तर में कश्मीर की तलहटी तक विस्तृत था।
- समुद्रगुप्त एक उच्च कोटि का कवि भी था जो 'कविराज' के नाम से कविता लिखा करता था।
- श्रीलंका के शासक मेघवर्मन ने गया (बिहार) में एक बौद्ध मन्दिर के निर्माण की अनुमति पाने के लिए, अपना दूत समुद्रगुप्त के पास भेजा और अनुमति प्राप्त की।

चन्द्रगुप्त द्वितीय 'विक्रमादित्य' (380 ई०-413 ई०)

- समुद्रगुप्त के पश्चात् रामगुप्त नामक एक दुर्बल शासक के अस्तित्व की जानकारी गुप्त वंशावली में निहित है, तत्पश्चात् चन्द्रगुप्त द्वितीय का नाम है। चन्द्रगुप्त द्वितीय, रामगुप्त का अनुज था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में गुप्त साम्राज्य अपने चरमोत्कर्ष को प्राप्त हो गया था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने वैवाहिक सम्बन्धों और विजय दोनों प्रकार से गुप्त साम्राज्य का विस्तार किया था।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के अभिलेखों व मुद्राओं से उसके अनेक नामों व विरुदों के विषय में पता चलता है। उसे 'देवश्री', 'विक्रम', 'विक्रमादित्य', 'प्रतिरथ', 'सिंहविक्रम', 'सिंहचन्द्र' 'परमभागवत', 'अजित विक्रम', 'विक्रमांक', आदि विरुदों से अलंकृत कहा गया है।

PCS 2015